सुरक्षात्मक प्लेट - किनारा

(iii)

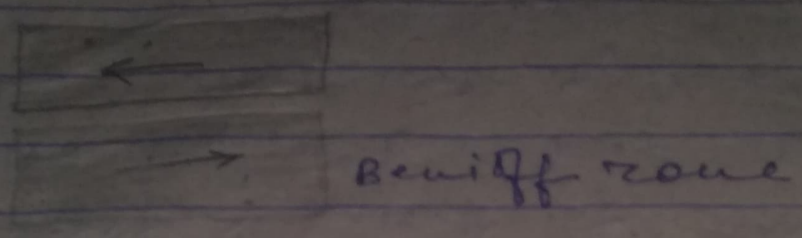

प्लेट विवर्तनिकी तथा महाद्वीपीय प्रवाह →

वेगेनर ने महाद्वीपों के स्थानान्तरण की दिशा और क्रमबद्धता को स्पष्ट नहीं किया है। इनका सिद्धांत कार्बोनिफरस युग से आरंभ होता है। इन्होंने कार्बोनिफरस काल से पहले की स्थिति का वर्णन नहीं किया है। क्योंकि पृथ्वी के सागरीय नितल के प्रसार तथा पुरा चुंबकत्व के प्रमाण पिछले 200 मिलियन वर्ष से ही प्रारंभ होते हैं।

1970 में valentine और मे. 1972 में Hallam ने प्लेट विवर्तनिकी की समान प्रक्रिया तथा महाद्वीपों में मिलने वाले प्रमाणों के आधार पर प्रारंभिक काल से वर्तमान समय तक महासागरों और महाद्वीपीय तली की स्थिति को क्रमवत स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

इनके अनुसार 700 मिलीयन वर्ष पूर्व सभी भूखंड पैंजिया I (प्रथम पैंजिया) के रूप में एक साथ जुड़े हुए थे। 600 से 500 मिलीयन वर्ष पूर्व प्रथम पैंजिया कई भागों में टूट गया तथा विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित हुआ। प्लेटों की गतिशीलता के कारण अटलांटिक या आद्य्य महासागर 700 मिलीयन वर्ष पूर्व खुलने लगा। इसी समय, अमेरिका तथा अफ्रीका के प्लेट एक दूसरे के विपरीत दिशा में प्रवाहित हुए। 400 मिलीयन वर्ष पूर्व तक आद्य्य महासागर का विस्तार जारी रहा। लगभग 200 मीलीयन वर्ष पूर्व अटलांटिक महासागर पुनः बन्द होने लगा। आद्य्य महासागर के बंद होने के कारण उत्तरी अमेरिका के अपलेशियन पर्वत खंड का निर्माण हुआ।

valentine तथा Moorse के अनुसार विभिन्न भूखंड जो विभिन्न प्लेटों पर व्यवस्थित थे 300 से 400 मीलियन वर्ष पूर्व पुनः जुड़ कर एक भूखंड के रूप में परिनत हो गए। इस महाद्वीप को द्वितीय पैंजिया या पैंजिया 2 का नाम दिया गया।

द्वितीय पैंजिया लुरासिया